केदारघाटी में जो 'घटा'

कई वर्षों में होगी उसकी भरपाई

शेषमणि शुक्ल

केदारघाटी में आया सैलाब तो गुजर गया लेकिन पीछे छोड़ गया तबाही के निशान। भजन कीर्तन और देव आराधना से गुलजार रहने वाली यह घाटी अब भांय-भांय कर रही है। न घंटे-घड़ियाल बज रहे हैं और न ही सुनाई दे रहा है अब कोई श्लोक। यदि कहीं से कोई आवाज आ रही है तो वह कराहों और प्रलापों की है। इस सैलाब ने न सिर्फ केदारघाटी को तबाह किया बल्कि यहां रहने वाले स्थानीय लोगों की रोजी-रोटी भी तबाह कर दी है। उनके दुकानें और होटल सब बर्बाद हो चुके हैं। घोड़े-खच्चर नदी में बह चुके हैं।

यात्रा सीजन ठप होने से अब पंडिताई का काम भी बंद हो गया है। सालभर के लिए परिवार के भरण-पोषण पर अब संकट मंडराने लगा है। आसपास के सड़क और पुल बह जाने से बाहरी क्षेत्रों से भी मदद की उम्मीद अब नहीं रही। केदार घाटी की स्थिति को देख सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि इस घाटी को फिर से गुलजार होने में सालों लग जाएंगे।

केदारनाथ से लेकर ऊखीमठ तक फैले केदारघाटी के अधिकांश गांवों का संपर्क मार्ग तहसील मुख्यालय से कट चुका है। पुल-पुलिया के बह जाने से इन गांवों के लोगों को मुख्य बाजार तक पहुंचने को कई किलोमीटर पैदल चलकर जाना पड़ रहा है। आपदा के बाद राज्य सरकार से लेकर केंद्र सरकार तक का सारा जोर केवल केदारघाटी में फंसे यात्रियों को निकालने पर रहा है। स्थानीय लोगों की दिक्कतों की ओर अब तक किसी का ध्यान नहीं गया है।

इस जल प्रलय से सर्वाधिक प्रभावित हुआ रुद्रप्रयाग-केदारनाथ मार्ग। इस मार्ग को बनने में कई साल लग जाएंगे। केदारनाथ से यात्रियों को लौटने के लिए बनाया गया रुद्रप्रयाग बाईपास भी गुलाबराय के पास बह गया। वहीं मुख्य यात्रा मार्ग पर स्थित कुंड का पुल बह जाने से यह रास्ता बंद हो चुका है। ऊखीमठ तहसील के गुप्तकाशी से लेकर तिरजुगी नारायण तक और कालीमठ की तरफ के सभी गांवों का तकरीबन यही हाल है। कालीमठ घाटी की तरफ कोटमा, कलूठा, कालीमठ, व्योंकी, कूड़जेठी, जाल तल्ला, जाल मल्ला, श्यांसू, चिलौंड, और रहेल गांव का संपर्क मार्ग भी कट चुका है। गुप्तकाशी और ऊखीमठ को जोड़ने वाला मंदाकिनी का पुल भी बह गया है। इस कारण लोगों को करीब 14 किलोमीटर तक पैदल चलना पड़ रहा है। कमोबेश यही स्थिति केदारनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित नाला,

लाइव | केदारघाटी

नारंगकोटी, कोठलादेवसाल, बांड़सू, त्यूड़ी, व्योमगाड़, मैखंडा, खड़िया, खाट, धानी, रविग्राम, सेरसी, बड़ासू, रामपुर, सीतापुर, तिरजुगीनारायण आदि गांवों की है।

इस मार्ग पर अभी भी जगह-जगह भूस्खलन हो रहा है और बार-बार रास्ता बंद हो जा रहा है। पिछले दो दिन में ही दो बार फाटा के पास रास्ता बंद हो चुका है। घाटी की खूबसूरती पूरी तरह नष्ट हो चुकी है। सड़क पर जगह-जगह सिर्फ मलबे का ढेर ही नजर आता है।

> दैवी आपदा से यात्रा सीजन तो खत्म ही हो गया। समय से पहले बारिश शुरू होने के कारण राशन भी जमा करने का मौका नहीं मिला। सभी रास्ते बंद हो जाने से अब आना जाना भी संभव नहीं है। अब तो हमारे सामने भुखमरी की समस्या आ जाएगी। वहीं क्षेत्र में न बिजली आ रही है और न ही घरों में कैरोसिन है।
>
> – कोटेडा के दिनेश पुरोहित

- केदारधाम अब बन गया है मरघट सरीखा
- दुकानदारी तो गई ही अब बंद हो गई पंडिताई भी
- मार्ग और पुल बहने से मदद की उम्मीद भी हुई खत्म

पुल जो बर्बाद हो गए

- सोनप्रयाग का पुल
- फाटा का नजदीक रेल गांव
- कुंड (गुप्तकाशी और ऊखीमठ को जोड़ने वाला), विद्यापीठ का पुल
- काकड़ागाड़ का पुल, भीरी, चंद्रापुरी, अगस्त्यमुनि, तिलवाड़ा

सड़कें जो चौपट हुईं

- गुप्तकाशी से कालीमठ मोटर मार्ग
- गुप्तकाशी से मयाली मोटर मार्ग
- गुप्तकाशी से गौरीकुंड मोटर मार्ग
- गुप्तकाशी से रुद्रप्रयाग मोटर मार्ग
- गुप्तकाशी से ऊखीमठ मोटर मार्ग

वीरानी के बाद यह अंधेरा

गुप्तकाशी। पूरी केदारघाटी में जहां तबाही का मंजर है और हर तरफ वीरानी छाई हुई है। उसमें बिजली न होने से फैला अंधेरापन पूरे वातावरण को और डरावना बनाता जा रहा है। देर रात तक गुलजार रहने वाला गुप्तकाशी बाजार अब शाम ढलते ही वीरान हो जाता है। हालांकि रविवार को गुप्तकाशी की बिजली व्यवस्था फौरी तौर पर की गई थी। सोमवार को बिजली रही भी लेकिन मंगलवार सुबह से ही गायब है। कब तक ठीक होगी, महकमे की ओर से इसका कोई भरोसा भी नहीं दिया जा रहा है। वहीं आपदाग्रस्त रुद्रप्रयाग जिले के दो ब्लाक ऊखीमठ और अगस्तमुनि ब्लाक के करीब डेढ़ हजार गांव पिछले दस दिनों से अंधेरे में हैं। केदारनाथ के जल प्रलय में गुम हो चुके परिजनों की तलाश में दूर-दराज से आए लोगों को यह अंधेरा और डरा रहा है। वे दुबके हुए किसी दुकान की शटर से सट कर बैठे अपनी रातें काट रहे हैं। अंधेरे में जरा सी खरखराहट भी उनके अंतरमन को हिला कर रख दे रही है।